RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-03
Issue-10
October-2018

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com [UGC Listed Journal]

'चित्रलेखा' और पाप की समस्या

मगन परमार

Research Fellow, Hindi Department, Gujarat University, Ahmedabad, Gujarat (India)

'चित्रलेखा' श्री भगवतीचरण वर्मा का अन्यतम उपन्यास है। इसमें उन्होंने पाप की समस्या पर विचार करने का प्रयास किया है। 'चित्रलेखा' उपन्यास की शुरुआत 'उपक्रमणिका' में श्वेतांक के प्रश्न "और पाप !"(1) से होती है। विशालदेव भी पाप के बारे में जानना चाहता है, परंतु महाप्रभु रत्नांबर को यह एक बड़ी कठिन समस्या लगती है। पाप के बारे में जानकारी पाने के लिए वे श्वेतांक को बीजगुप्त के पास और विशालदेव को योगी कुमारगिरि के पास छोड़ देते हैं। एक वर्ष बाद अपने अनुभवों के आधार पर श्वेतांक कुमारगिरि को पापी मानता हैं और विशालदेव बीजगुप्त को पापी मानता हैं। महाप्रभु के मत से भिन्न भिन्न परिस्थितियों में रहने के कारण इनकी पाप विषयक धारणाएँ अलग-अलग हो गई हैं। वास्तव में संसार में पाप कुछ भी नहीं है; व्यक्ति वही करता है, जो उसे करना पड़ता है। उपन्यास में प्रस्तुत कथानक के आधार पर निकाले गए इस निष्कर्ष में तार्किकता का अभाव है।

बीजगुप्त उपन्यास का नायक और उपन्यास के प्रमुख पात्र चित्रलेखा का प्रेमी है। कथा की शुरुआत में भोग एवं विलास ही उसका जीवन हैं, परंतु केवल भोग एवं विलास के आधार पर किसी को पापी नहीं माना जा सकता। अपने गुरु-भाई श्वेतांक का विवाह कराने के लिए उसको अपना सब-कुछ दान कर वह एक पुण्य का कार्य अवश्य करता है।

उपन्यास में कुमारगिरि का चरित्र प्रतिनायक के रुप में दिखायी देता है। साधना और संयम में जीनेवाला योगी चित्रलेखा की मादकता के प्रभाव में आ जाता हैं। वह चित्रलेखा से दूर ही रहना चाहता है, परंतु चित्रलेखा के संसर्ग में वह अपने को रोक नहीं पाता- "चित्रलेखा ने अपना मुख थोड़ा-सा और बढ़ाया। कुमारगिरि ने अपना मुख हटाया नहीं, उसका भी श्वास गरम हो गया था।"(2) चित्रलेखा के वासनारहित प्रेम की बात सुनकर योगी उसे दीक्षा देने के लिए तैयार हो जाते हैं और विशालदेव को बताते हैं- "....तुम्हारे गुरु ने तुमको यहाँ पर पाप का पता लगाने भेजा है, अब तुम्हें अवसर मिला है कि तुम पाप देखो और उस पर विजय पाना भी देखो।"(3) परंतु योगी पाप पर विजय नहीं पा सकें, क्योंकि चित्रलेखा के सांनिध्य से योगी के हृदय में वासना की आग प्रज्वलित हो जाती है और वे चित्रलेखा को आलिंगन कर उसके अधरों से अधर मिला देते हैं। चित्रलेखा आलिंगन छुड़ाकर हट जाती है। योगी अपनी वासना को दूर रखने का प्रयास करते हैं, परंतु यह भावना स्थायी नहीं रह पाती। चित्रलेखा को फँसाने के लिए वे झूठ बोलते हैं कि बीजगुप्त और यशोधरा का विवाह हो गया हैं। चित्रलेखा मन से टूट जाती है और योगी उसे अपनी वासना का शिकार बना लेता है- "....बीजगुप्त ने एक आधार पा लिया, तुम्हें भी आधार न ढूँढना पड़ेगा, देवि चित्रलेखा, मैं तुमसे प्रेम करता हूँ!"(4)

योगी कुमारगिरि को सिर्फ एक ही बात पर पापी माना जा सकता है कि उसने अपनी वासना संतुष्टि के लिए चित्रलेखा से झूठ बोला। योगी में रही वासना को उसका पापाचार मानना उचित नहीं हो सकता, क्योंकि वह तो चित्रलेखा के सांनिध्य से दूर ही रहना चाहता था और इसीलिए वह उसे दीक्षा भी नहीं देता था। उसमें वासना का आ जाना चित्रलेखा के संसर्ग का ही परिणाम है और यह संसर्ग चित्रलेखा ने योगी के बार-बार मना करने पर भी बनाया है; योगी से दीक्षित होकर।

उपन्यास की मुख्य कथा चित्रलेखा की है। वह बीजगुप्त से प्रेम करती है। वासना के आवेश में वह योगी से संपर्क बनाती है। दीक्षा के बाद उसका झुकाव साधना एवं त्याग की ओर हो जाता हैं। अंत में योगी से भ्रष्ट होकर वह बीजगुप्त के पास चली जाती है। चित्रलेखा के इस जीवन में वासना एवं प्रेम की ही प्रधानता रहती हैं।

चित्रलेखा ब्रह्मचारी श्वेतांक को मदिरा पिलाकर उसे अपनी मादकता से प्रभावित करती है- "अनजान में एक अबोध बालक को उसने अपने यौवन की मादकता का शिकार बनाया था, इस पर उसे दुःख था।"(5) चित्रलेखा से यह पाप हो गया है। योगी और अपना भेद छिपाए रखने के लिए वह श्वेतांक को शराब पिलाकर उससे बीजगुप्त के पास'झूठ बोलने' का पाप करवाती हैं।

© RRIJM 2015, All Rights Reserved

त्याग के बहाने बीजगुप्त को छोड़कर चित्रलेखा एक और पाप करती है। बीजगुप्त को राजमार्ग पर छोड़ते वक्त वह स्वीकार करती है- "बीजगुप्त ! संभवतः मैं अनुचित कर रही हूँ– उसके लिए क्षमा करना!"[6] बीजगुप्त के विवाह न करने और सब कुछ त्याग देने में भी चित्रलेखा खुद को दोषी मानती है- "नाथ ! मैंने तुम्हारा जीवन नष्ट कर दिया; मैंने तुम्हें मिटा दिया; ....।"[7] पश्चाताप से रोती हुई चित्रलेखा को बीजगुप्त आलिंगन करना चाहता है, तब वह हट जाती है-"नहीं, मेरे देवता ! मेरे शरीर को आप स्पर्श न करें। मैं अपवित्र हूँ, पतिता हूँ, पापिनी हूँ मेरे देवता !"[8]

चित्रलेखा तपस्वी एवं योगी कुमारगिरि को दीक्षा के बहाने अपनी ओर आकर्षित करने का पाप करती है- "चित्रलेखा बिल्कुल मिली खड़ी थी, उसके नेत्र कुमारगिरि के नेत्रों से मिले हुए थे, चित्रलेखा के अलसाए-से नेत्रों मे न जाने कहाँ की मदिरा थी। मुस्कराते हुए उसने उत्तर दिया—"मैं आई हूँ, अपने उपर विजय पानेवाले से दीक्षित होने के लिए।"[9] पाप की दुहाई देकर वह योगी से दीक्षा लेना चाहती है- "....यदि किसी के पास जल है और वह व्यक्ति पिपासाकुलित अतिथि को जल देने से इनकार कर उसे प्यास से तड़प-तड़पकर मरते देखता है, तो यह समझ रखना, वह बहुत बड़े पाप का भागी होता है।"[10] उसके बाद योगी धीरे-धीरे अपना संयम खो बैठते है। वे चित्रलेखा को आलंगिन करते हैं, परंतु वह हट जाती है। अब चित्रलेखा को अपने किए पर पछतावा होता है। योगी के पास रहना उसे अपने और योगी दोनों के लिए अनुचित लगता हैं- "....मैंने यहाँ आकर अपने को गिराया है। अधिक गिरने के लिए मैं तैयार नहीं। साथ ही मैं कुमारगिरि को भी गिरा रही हूँ और यह एक महान् पाप है।"[11] विशालदेव जब यह बताता है कि चित्रलेखा की उपस्थिति कुटी की शांति को नष्ट कर रही है, तब वह इस बात को हंसकर निकाल देती है- "दया ! किस पर दया करने को कह रहे हो और किससे दया करने को कह रहे हो? तुम बधिक से दया की आशा करते हो–तुम संहारकर्ता से निर्माण कराना चाहते हो?"[12]

उपन्यास में श्वेतांक सहनायक के रुप में सामने आता है। उपन्यास की शुरुआत ही उसकी पाप-विषयक जिज्ञासा से होती है। अपने स्वामी बीजगुप्त की प्रेमिका चित्रलेखा से प्रेम करने का वह अपराध करता है- "स्वामी, मैंने आपके साथ विश्वासघात करने का अपराध किया है। मैंने उस स्त्री से प्रेम करने का अपराध किया है, जो आपसे प्रेम करती है और जिससे आप प्रेम करते हैं, और साथ ही जो मेरी स्वामिनी है।"[13] चित्रलेखा के बारे में वह बीजगुप्त से यह झूठ बोलता है कि- "स्वामिनी ने तो कुछ नहीं कहा; पर ऐसा प्रतीत होता है कि वे मन्त्री चाणक्य के यहाँ आमंत्रित थीं।"[14] श्वेतांक को लगता है कि उसने बीजगुप्त से झूठ बोलकर पाप किया था और अब चित्रलेखा मिलने आई है और बीजगुप्त की अनुपस्थिति की वजह से शायद उसे अधिक पाप करना पड़ सकता हैं। महाप्रभु रत्नांबर ने श्वेतांक को 'पाप' का पता लगाने के लिए बीजगुप्त के पास छोड़ा है, परंतु श्वेतांक को बीजगुप्त सर्वश्रेष्ठ मनुष्य लगता है। इसलिए अपने पाप का पता लगाने के स्थान की उपर्युक्तता के बारे में वह असमंजस में पड़ जाता हैं।

चित्रलेखा के वियोग से बीजगुप्त दुःखी हो जाता है। काशी-यात्रा के दौरान वह यशोधरा की और यथेष्ट आकर्षित हो जाता है और उसके प्रस्ताव करने पर उसका विवाह भी संभव है, परंतु श्वेतांक को बीजगुप्त का यशोधरा के प्रति यह आकर्षण अच्छा नहीं लगता क्योंकि वह यशोधरा से प्रेम करना चाहता है, जबकि यशोधरा से उसके प्रेम या विवाह की कोई संभावना ही नहीं है। बहुत सोच-विचार के बाद बीजगुप्त यशोधरा से विवाह करने के लिए मन बनाता है, परंतु श्वेतांक अपने और यशोधरा के पाणि-ग्रहण की प्रार्थना करके बीजगुप्त का हौंसला तोड़ देता है, जबकि वह यह जानता है कि बीजगुप्त यशोधरा की ओर आकर्षित है। श्वेतांक का यह कृत्य पाप ही माना जा सकता है। बीजगुप्त अपना वैभवी एवं सांसारिक जीवन छोड़कर भिखारी बन जाता हैं तब श्वेतांक को अपने किए पर पछतावा होता है- "नहीं! नहीं ! स्वामी, मुझे यह स्वीकार नहीं। मैं कितना पापी हूँ–स्वामी, मुझे क्षमा करो–मैं जाता हूँ, मुझे क्षमा करो; मैंने आपके जीवन को नष्ट किया है–आप मुझ नराधम पर यह दया क्यों कर रहे हैं–मुझे स्वीकार नहीं है।"[15]

वयोवृद्ध सामंत मृत्युंजय त्याग एवं विराग की वृत्ति वाले हैं। अपनी कन्या यशोधरा के विवाह के लिए बीजगुप्त को उचित वर मानते हुए उसे मनाने की कोशिश करते हैं, परंतु बीजगुप्त श्वेतांक के विवाह का प्रस्ताव रखता है। श्वेतांक की निर्धनता दूर करने के लिए वह अपना सब-कुछ उसे दान कर देता हैं तब मृत्युंजय विवाह-प्रस्ताव स्वीकार कर लेते हैं। वयोवृद्ध सामंत मृत्युंजय के लिए यह पाप ही माना जाएगा कि उन्होंने अपनी पुत्री यशोधरा के विवाह के लिए आशास्पद युवक श्वेतांक की निर्धनता दूर करने के लिए युवा सामंत बीजगुप्त के वैभवी एवं सांसारिक जीवन का नष्ट होना भी स्वीकार कर लिया। 'यज्ञ से बलि-प्रदानवाला अंश' निकालने की बात करनेवाले मृत्युंजय अपनी पुत्री यशोधरा के विवाह रुपी यज्ञ में बीजगुप्त के वैभवी एवं सांसारिक जीवन का बलि होना नहीं देख पाते?

© RRIJM 2015, All Rights Reserved

सारांशतः उपन्यास के अंत में उपसंहार में श्वेतांक कुमारगिरि को पापी मानता है। कुमारगिरि अपनी वासना संतुष्टि के लिए चित्रलेखा से झूठ बोलता है, इसलिए वह पापी है। विशालदेव का बीजगुप्त को पापी बताना पूर्णतः गलत है। उपन्यास के नायक बीजगुप्त के वैभवी एवं सांसारिक जीवन के नष्ट होने के बारे में मुख्य रुप से चित्रलेखा और गौण रुप से श्वेतांक और मृत्युंजय पापी ठहरते हैं। निष्कर्ष में लेखक ने अपनी पाप विषयक धारणा को कुमारगिरि और बीजगुप्त तक सीमित रखा हैं। अधिक उचित होता अगर लेखक पाप के प्रकाश में चित्रलेखा, श्वेतांक और मृत्युंजय को भी देखने का प्रयास करते।

संदर्भ-ग्रंथ सूचि :

(1) चित्रलेखा, राजकमल पेपरबैक्स, छठी आवृत्ति-2014, पृष्ठ-7
(2) चित्रलेखा, राजकमल पेपरबैक्स, छठी आवृत्ति-2014, पृष्ठ-59
(3) चित्रलेखा, राजकमल पेपरबैक्स, छठी आवृत्ति-2014, पृष्ठ-101
(4) चित्रलेखा, राजकमल पेपरबैक्स, छठी आवृत्ति-2014, पृष्ठ-175
(5) चित्रलेखा, राजकमल पेपरबैक्स, छठी आवृत्ति-2014, पृष्ठ-31
(6) चित्रलेखा, राजकमल पेपरबैक्स, छठी आवृत्ति-2014, पृष्ठ-120
(7) चित्रलेखा, राजकमल पेपरबैक्स, छठी आवृत्ति-2014, पृष्ठ-194
(8) चित्रलेखा, राजकमल पेपरबैक्स, छठी आवृत्ति-2014, पृष्ठ-195
(9) चित्रलेखा, राजकमल पेपरबैक्स, छठी आवृत्ति-2014, पृष्ठ-54
(10) चित्रलेखा, राजकमल पेपरबैक्स, छठी आवृत्ति-2014, पृष्ठ-55
(11) चित्रलेखा, राजकमल पेपरबैक्स, छठी आवृत्ति-2014, पृष्ठ-149
(12) चित्रलेखा, राजकमल पेपरबैक्स, छठी आवृत्ति-2014, पृष्ठ-178
(13) चित्रलेखा, राजकमल पेपरबैक्स, छठी आवृत्ति-2014, पृष्ठ-31
(14) चित्रलेखा, राजकमल पेपरबैक्स, छठी आवृत्ति-2014, पृष्ठ-69
(15) चित्रलेखा, राजकमल पेपरबैक्स, छठी आवृत्ति-2014, पृष्ठ-189

© RRIJM 2015, All Rights Reserved